

लोक साहित्य विविध रूप एवं विविध परिदृश्य

सम्पादक

प्रो. अशोक सिंह ■ डॉ. सुरेन्द्र पाण्डेय



युगान्तर प्रकाशन

डी-750, गली नं. 4,

अशोक नगर, शाहदरा,

दिल्ली-110093

मोबाइल : 09802579680

प्रथम संस्करण 2017

© डॉ० सुरेन्द्र पाण्डेय

Yugantar Publication

D-750, Gali No.-4, Ashok Nagar

Shahdra, Delhi-110093

Mob. No. : 09802579680

ISBN: 978-93-82329-13-8

मूल्य : ₹ 300/-

कम्पोजिंग : सुधीर कुमार

लंका, वाराणसी, मो० 7408996394

विषय—सूची

1. लोक संस्कृति की सुवास : छत्तीसगढ़
डॉ० शीला दानी 1—7
2. लोक साहित्य का महत्व
डॉ० शैलेन्द्र कुमार सिंह 8—15
3. लोक साहित्य का मूलाधार भोजपुरी संस्कृति
डॉ० चम्पा सिंह 16—25
4. लोक साहित्य एक परिचय
डॉ० सुरेन्द्र पाण्डेय 26—35
5. उत्तराखण्ड का लोक साहित्य
प्रो० अशोक सिंह 36—51
6. भोजपुरी लोक संस्कृति
प्रो० तीर्थेश्वर सिंह 52—61
7. लोक संस्कृति : एक अध्ययन
डॉ. जितेन्द्र कुमार सिंह 62—70
- ✓ 8. लोक जीवन का आख्यान : लोक साहित्य
डॉ० अरविन्द कुमार 71—85
9. भोजपुरी लोक साहित्य में लोक संस्कृति
दिनेश कुमार यादव 86—92
10. लोकगीतों में स्त्री क्रंदन
डॉ० अफरोज बेगम 93—102
11. लोकसाहित्य के विकास में लोककवि घाघ का योगदान
डॉ० महेश सिंह यादव 103—108
12. भोजपुरी भाषा और लोक साहित्य
डॉ० सुरेन्द्र पाण्डेय 109—114
13. साहित्य के संवर्धन में लोक साहित्य का योगदान
डॉ० विकास कुमार 115—121
14. लोकगीत परंपरा, परिभाषा और भेद
डॉ० संतोष पाण्डेय 122—124

लोक जीवन का आख्यान : लोक साहित्य

डॉ० अरविन्द कुमार*

लोक साहित्य किसी देश का वह सामाजिक—सांस्कृतिक दस्तावेज होता है, जिसमें जन साधारण का जीवन प्रतिबिम्बित होता दिखाई देता है। लोक साहित्य की रचना जन साधारण द्वारा होती है। लोक से तात्पर्य उस जन साधारण से है, जो किसी देश अथवा समाज में निवास करता है। लोक शब्द का सर्वप्रथम उल्लेख ऋग्वेद में मिलता है, जहाँ यह शब्द जन साधारण के परिप्रेक्ष्य में कई बार उल्लिखित हुआ है। “महाभाष्यकार पतंजलि ने भी जन साधारण के अर्थ में ‘लोक’ शब्द का व्यवहार किया है।”¹ जब इस जनसाधारण द्वारा बिना पोथियों के ज्ञान के उनकी साधारण बोलचाल की भाषा में हृदय के उद्गार, भाव—विलास, हर्ष—विषाद आदि शब्दों का आश्रय पाते हैं, तब वह लोक साहित्य के रूप में जाना जाता है।

“लोक साहित्य शब्द ‘लोक’ और ‘साहित्य’ इन दो शब्दों से बना है। इसका वास्तविक अर्थ है लोक का साहित्य; लोक यहाँ अंग्रेजी के फोक (Folk) शब्द का पर्यायवाची है। लोक साहित्य भी अंग्रेजी के फोक लिटरेचर का ही अनुवाद है। फोक के पर्याय से लोक—साहित्य के कई अर्थ हो सकते हैं — 1. उस लोक का साहित्य जो सभ्यता की सीमाओं से बाहर है, सभ्य समाज में जिनकी गिनती नहीं है, उनका साहित्य। 2. जंगली जातियों का साहित्य। ‘फोक’ शब्द के अन्तर्गत वे ही लोग आ सकते हैं, जो आदिम परम्परा को सुरक्षित रखे हुए हैं, क्योंकि लोक साहित्य का सम्बन्ध फोक लिटरेचर अथवा लोकवार्ता साहित्य से है। 3. लोक साहित्य ग्रामीण साहित्य है। 4. लोक साहित्य वह युग—युगीन साहित्य है, जो मौखिक परम्परा से प्राप्त होता है, जिसके रचयिता का पता

* असिस्टेंट प्रोफेसर, हरिसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर, (म०प्र०)